हमारी गुलामी के कारण

१६ अगस्त १९४७

चौधरी चरण सिंह

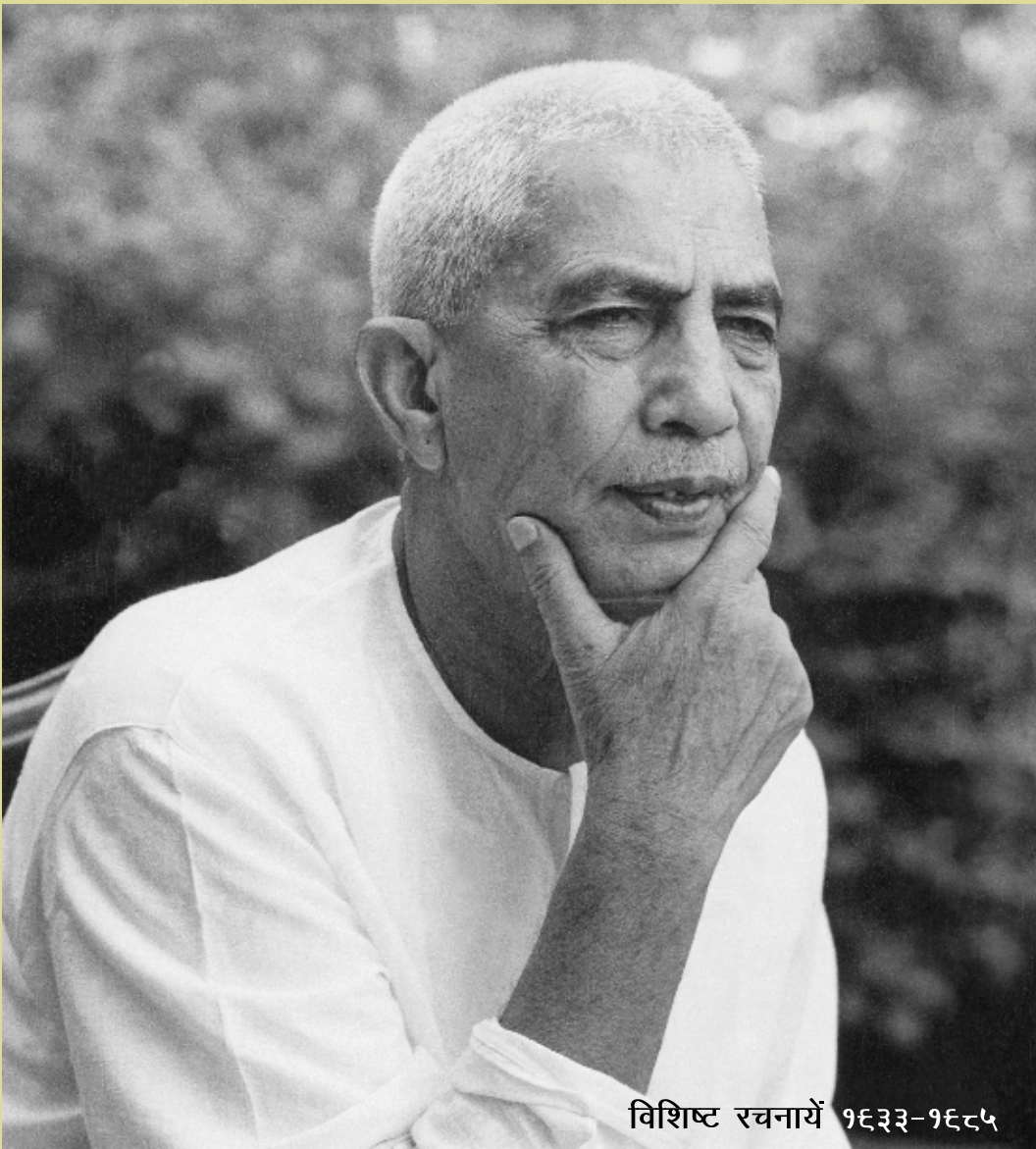

विशिष्ट रचनायें १९३३-१९८५

२६ जनवरी २०२२
चरण सिंह अभिलेखागार द्वारा प्रकाशित
www.charansingh.org
info@charansingh.org

सर्वाधिकार सुरक्षित। इस प्रकाशन को केवल पूर्व अनुमति के साथ
पुनः प्रस्तुत, वितरित या प्रसारित किया जा सकता है।
अनुमति के लिए कृपया लिखें info@charansingh.org

अक्षर तथा आवरण संयोजन राम दास लाल
सौरभ प्रिंटर्स प्राइवेट लिमिटेड, ग्रेटर नोएडा, भारत द्वारा मुद्रित।

चरण सिंह के पिता मीर सिंह तथा माता नेत्र कौर, १९५०

चरण सिंह का जन्म २३ दिसंबर १९०२ को "एक साधारण किसान के यहां छप्पर छवाये मिट्टी की दीवारों से बने घर में हुआ था, जहां आंगन में एक कुंआ था, जिसका पानी पीने और सिंचाई के काम आता था।"[1] संयुक्त प्रांत (उत्तर प्रदेश) के मेरठ जिले के नूरपुर गांव में एक पट्टेदार गरीब किसान की कच्ची मढ़ैया में पैदा हुआ यह शिशु आज़ाद भारत में देहात की बुलंद आवाज बना।

---

* चरण सिंह के अपने शब्दों में

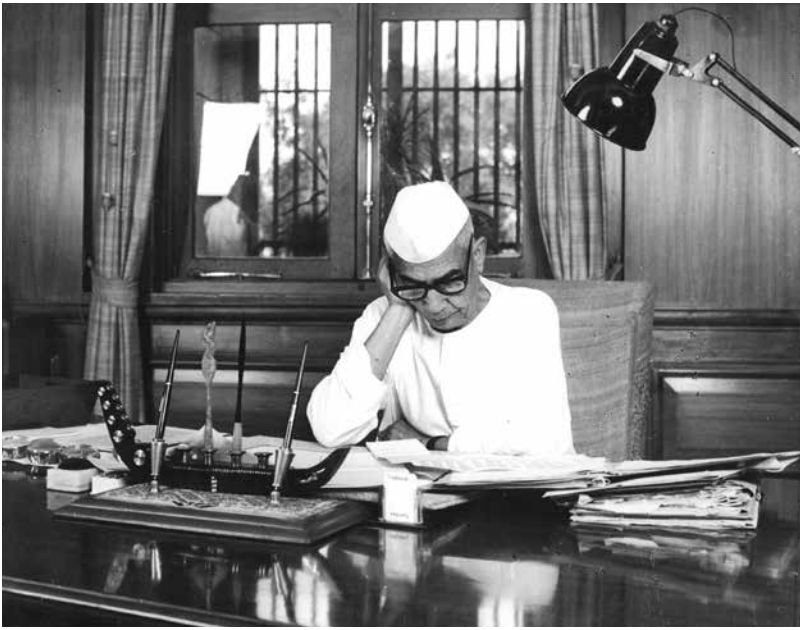

चौधरी चरण सिंह
भारत के प्रधान मंत्री। दिल्लीं, १९७९

ग्रामीण भारत के जैविक बुद्धिजीवी

१
हमारी गुलामी के कारण

अंग्रेज भारतीयों से किसी भी तरह श्रेष्ठ नहीं थे, इसके बावजूद उन्होंने भारत पर सैकड़ों वर्ष तक शासन किया। इसके पीछे कौन से कारण थे तथा उनके विरोध के संदर्भ में समकालीन कांग्रेस की क्या भूमिका थी, चौधरी चरण सिंह ने इस तथ्य का विश्लेषण इलाहाबाद एवं लखनऊ से प्रकाशित 'अमृत बाज़ार पत्रिका' के १६ अगस्त, १९४७ के 'कांग्रेस विशेषांक' में, 'कॉज़ेज ऑफ अवर स्लेवरी' शीर्षक से लिखे लेख में किया है। उस समय वह उत्तर प्रदेश सरकार में सभा सचिव थे।

अंग्रेज हम लोगों से किसी भी तरह श्रेष्ठ नहीं हैं, चाहे हम उनके देश के (आर्थिक) स्रोतों से तुलना करें या उन की शारीरिक या मानसिक क्षमता से। न ही उनके पास हमें नैतिकता एवं सभ्यता की सीख देने जैसा कुछ था, कम–से–कम जब वे हिन्दुस्तान आये। बल्कि कला, संस्कृति एवं सभ्यता को बाजारू माल मानकर हिन्दुस्तान एवं इंग्लण्ड के बीच व्यापार हो, तो पलड़ा हिन्दुस्तान का ही भारी पड़ेगा–इस आशय की स्वीकारोक्ति एक अंग्रेज ने ही १८३३ में हाऊस ऑफ कॉमन्स की एक समिति के समक्ष की थी। फिर भी अंग्रेजों ने कई पीढ़ियों तक हम पर शासन किया। सवाल उठता है–कैसे?

इसके दो या तीन मामूली कारण हैं–यूरोपीय अनुशासन एवं सैन्य तकनीकी श्रेष्ठता, दिल्ली स्थित केन्द्रीय सत्ता के क्षीण हो जाने के कारण देश में व्याप्त अराजक स्थिति वगैरह, लेकिन इसका जो सबसे प्रमुख कारण रहा है, वह है हममें राष्ट्रीय विवेक का अभाव।

देशभक्ति का अभाव

इंग्लैण्ड ने भारत को जीता एवं भारतीय सैनिकों, जिनका भरण–पोषण

भारतीय धन से ही होता था, के जरिये उसे पराधीन बनाये रखा। इंग्लैण्ड के खजाने से उसके लिए एक भी पैसा नहीं आता था। १७७३ ई० में ईस्ट इंडिया कम्पनी के पास ५४,००० सैनिक थे, जिनमें अंग्रेजों की संख्या मात्र ९,००० थी; १८०८ ई० में कुल १,५५,००० सैनिकों में से सिर्फ ४५,००० ही अंग्रेज थे; और सन् १८५४ में जब फौजियों की कुल संख्या २,८०,००० हुआ करती थी, तब भी उसमें मात्र ४५,००० ही अंग्रेज सैनिक थे, यानी सेना में औसतन मात्र १६ प्रतिशत ही अंग्रेज रहे। गौर करने की बात यह भी है कि ब्रिटिशकालीन भारत में ऐसा कोई भी निर्णायक युद्ध नहीं हआ, जिसमें अंग्रेज फौजियों की टुकड़ी ने संख्या बल में अपने बराबर के हिन्दुस्तानी सैनिकों का सामना कर, पराजित किया हो। इतिहास शायद ऐसा कोई उदाहरण प्रस्तुत नहीं करता, जिसमें एक विदेशी विजेता ने सिर्फ तनख्वाह देकर किसी देश में सेना तैयार की हो और जिसका इस्तेमाल उसी देश को जीतने के लिए किया हो। लेकिन अंग्रेजों ने भारत में बिल्कुल वही किया। अतः भारत के बारे में यह नहीं कहा जा सकता कि इसे विदेशियों ने जीता बल्कि इसने खुद को पराजित किया। सवाल है, ऐसा क्यों हुआ?

इसका जवाब यह है कि भारत को कभी विदेशियों से ईर्ष्या नहीं हुई, क्योंकि यहां राष्ट्रीय एकता की कोई सोच ही नहीं थी। इसलिए राजनीतिक दृष्टि से (और शायद ही किसी और नजरिये से) भारत का अस्तित्व एक देश जैसा था ही नहीं। अगर सही कहा जाय, तो यहां कोई भी विदेशी नहीं था।

यद्यपि प्राचीन काल की तरफ पीछे मुड़कर हम देखें, तो पाते हैं कि कभी एक आक्रामक जाति, कभी दूसरी, कम या ज़्यादा अंतराल पर यहां आती रहीं, लेकिन विदेशी आक्रामकों का बिना किसी बाधा के लगातार, ग्यारहवीं शताब्दी के बाद ही यहां आना शुरू हुआ। विदेशी गुलामी की तरफ भारत तेजी से बढ़ा और राज्य लोगों में देश–भक्ति की भावना जगाने का अपना अधिकार खो बैठा (जिसे कल ही, यानी १५ अगस्त १९४७ को ही वह फिर से वापस पा सका है)। राष्ट्रीयता का बंधन शताब्दियों पहले टूट चुका था तथा स्वदेशी एवं विदेशी के बीच के काफी भेद क्रमशः धीरे–धीरे खत्म हो चुके थे। अंग्रेजों के दृश्य–पटल पर आने के काफी पहले ही राज्य इस स्थिति को पहुंच चुका था, क्योंकि हम यह भी पाते हैं कि मुगलों ने भी बिना किसी प्रकट साधन के विजय प्राप्त की थी। बाबर किसी शक्तिमान राष्ट्र को अपने पीछे लेकर नहीं आया था और न ही किसी ताकतवर राज्य के किसी संगठन पर वह अवलम्बित था।

एकता का अभाव

किसी भी आदमी का यह कर्तव्य माना जाता है कि वह अपने देश के लिए विदेशियों से लड़े लेकिन एक आदमी के लिए देश का वास्तविक अर्थ क्या है? इस सिद्धांत की व्याख्या करने पर हम पाते हैं कि मनुष्य का लालन–पालन एक समुदाय में होता है, जिसे एक विशाल परिवार के रूप में देखा जा सकता है। इसलिए वह स्वभावतः वहां की भूमि को अपनी मां जैसा समझने लगता है लेकिन दूसरी तरफ, भारत में यह समुदाय ऐसे (एक रूप) परिवारों से मिलकर नहीं बना है बल्कि दो या दो से ज़्यादा ऐसी जाति, धर्म या भाषा समूहों से मिलकर बना है, जो अगर देश से नहीं, तो एक–दूसरे से घृणा करते रहे थे। हिन्दुओं जैसे मुख्य धार्मिक समूह के अन्दर ही हजारों जातियां थीं, जिनको एक सूत्र में बांधने जैसा कुछ था ही नहीं।

राष्ट्रीयता का संयोजन जिन तत्त्वों से होता है, उनमें से अग्रणी होता है एक सामूहिक धर्म। हिन्दूवाद के रूप में यह तत्त्व यहां विद्यमान था, जिसे यहां की विशाल बहुसंख्यक आबादी मानने वाली थी लेकिन यह इतना शक्तिशाली साबित नहीं हुआ कि इस देश को संयुक्त कर, एक पूर्ण राजनीतिक अविभाज्य शक्ति बना सके। वे एक भीड़ के समान बिना किसी समान भावना एवं हित के व्यक्तिगत पिण्ड की तरह एक–दूसरे से कटे रहे। जाति, उपजाति, परम्परा, एक–दूसरे से भिन्न धार्मिक आस्थाओं, अंधविश्वासों के चलते बंटे होने के कारण जो कुछ सूत्र भी उन्हें एक साथ बांधे रखते थे, वह निहायत ही कमजोर थे। बाहरी दबावों एवं कई शताब्दियों तक एक के बाद एक होते गये अफगान, तुर्क या मुगल आक्रमणों के कारण उत्पन्न हुए अनुकूल वातावरण के बावजूद हिन्दूवाद में देश–भक्ति का समावेश नहीं हुआ। इसने हमलावर, चाहे वह भू–मार्ग से आया हो या समुद्री रास्तों से, के खिलाफ देशवासियों को जगाने और एकजुट करने का प्रयास कभी नहीं किया। यद्यपि मराठों ने मुगल साम्राज्य के ऊपर भयानक प्रहार किये थे लेकिन वे, अगर भारतीय नहीं, तो एक हिन्दू राज्य के तौर पर भी अपने को विकसित करने के बजाए पांच अलग–अलग विभाजित टुकड़ों में बंटे और बहुत आसानी से अंग्रेजों के शिकार बन गये।

यही कारण था कि जब अंग्रेजों के चरण यहां पड़े, तो भारतीय की बात कौन कहे, एक भी हिन्दू भारत की इस भूमि पर मौजूद नहीं था। यहां के सारे निवासियों को एक सूत्र में बांधने वाला कोई धागा ही नहीं था। हमारी वफादारी संकीर्ण थी; और हमारी दृष्टि सीमित। वे जाति, भाषा

समूह या किसी भी तरह धर्म की सीमा से ऊपर उठे ही नहीं। उनकी निष्ठा 'भारत माता' के प्रति कभी नहीं थी। भारत का मतलब उनके लिए सिर्फ भौगोलिक विस्तार भर था।

रॉबर्ट क्लाईव एवं वारेन हेस्टिंग्स के कई समकालीन या उनके प्रतिद्वंद्वी भारतीय अपने निजी जीवन में उनसे कहीं ज़्यादा श्रेष्ठ थे लेकिन उन्होंने अपनी वचनबद्धता को कभी नहीं तोड़ा, नतीजतन उनके अपने ही लोग गुलाम बनते गये, जबकि दूसरी तरफ अंग्रेजों ने अपने वचन का मान एक बार भी नहीं रखा, अगर वह इंग्लैण्ड के हित के खिलाफ जा रहा हो।

ऐसा क्यों हुआ? इसका जवाब पूर्व कथन को दुहराना ही है; क्योंकि समान राष्ट्रीयता या एक सामूहिक मातृभूमि की भावना हमारे पूर्वजों ने अनुप्राणित नहीं की, जबकि इंग्लैण्ड का अस्तित्व उसकी संतानों के लिए जीवंत था—कुछ ऐसा, जिसके लिए वे कुछ भी त्याग देते।

कांग्रेस की भूमिका

भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना १८८५ ई० में हुई। हमारे नेताओं ने हमारे राजनीतिक पतन के कारणों की ठीक मीमांसा की। उन्होंने पाया कि सदियों से लाखों—करोड़ों की संख्या में लोग भारत में रहते आये हैं लेकिन एक आदमी भी इस देश के प्रति कभी वफादार नहीं रहा। हम या तो हिन्दू थे या मुसलमान, बंगाली या पंजाबी, ब्राह्मण या राजपूत लेकिन भारतीय कोई भी नहीं। इसलिए वे एक सामूहिक राष्ट्रीयता का विकास करने आगे बढ़े, एक ऐसी वफादारी पैदा करने का संकल्प लिया, जो नस्ल या भाषा, जाति या लिंग से जुड़ी हुई निष्ठा से ऊपर हो—वफादारी उस मातृभूमि के लिए, जो हम सभी के लिए है, जिसका वाजिब हक बनता है। उन्होंने यह सटीक अनुमान लगाया कि एक बार समान राष्ट्रीयता की भावना यहां अस्तित्व में आ गयी, एक बार लोगों में यह समझ पैदा हो गई कि एक—दूसरे पर अपना प्रभुत्व बरकरार रखने के लिए विदेशियों की मदद करना कितनी शर्मनाक बात है, तो गुलामी की जंजीरें जोरदार आवाज के साथ टूटेंगी और बर्तानवी साम्राज्य का देखते—देखते अंत हो जायेगा।

सही पूर्वानुमान से महात्मा गांधी के नेतृत्व में वे अपने सपनों को ठोस आकार देने के लिए आगे बढ़े। कांग्रेस के प्लेटफार्म से बिना जाति, लिंग या भाषा के विभेद के सारे भारतीयों के लिए एक मंच तैयार हो गया, तिरंगा सबका झंडा बना, 'वन्देमातरम्' एवं 'सारे जहां से अच्छा' सामूहिक गाने। महात्मा गांधी एवं उनके विश्वस्त प्रतिनिधि—लोकमान्य तिलक एवं अन्य दूसरे नेता, जो शहीद हो चुके थे—सबके नायक और २६ जनवरी

राष्ट्रीय दिवस। हिन्दी या हिन्दुस्तानी को देश में सबके लिए व्यवहृत प्रचलित भाषा के रूप में स्वीकृति मिलने लगी। इतिहास में उल्लेखित कई दूसरे सामूहिक, सांस्कृतिक एवं मनोवैज्ञानिक कारक तथा एक समान भूमि पर एक साथ गुजर–बसर करने जैसे तथ्यों पर भी कांग्रेस ने जोर दिया। एक समान, विदेशी नस्ल की सामूहिक गुलामी एवं उसके साथ–साथ समान कानून, शिक्षा एवं प्रशासन, जिसे विदेशी शासन के दौरान थोपा गया, वही अंततः राष्ट्रीय स्तर पर जागरूकता बढ़ाने वाला साबित हुआ। इसका बुनियादी कारण एक ही था–मिश्रित राष्ट्रीयता का विचार।

कांग्रेस की सफलता एवं असफलता

गांधीजी के नेतृत्व में आरम्भ हुए अनेक राजनीतिक, आर्थिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक आन्दोलनों के कारण स्वयंसेवकों का एक ऐसा जत्था तैयार हो गया, जो नये जीवन की आकांक्षा से स्पंदित, एक नयी दृष्टि से अनुप्रेरित एवं अपने गुरु द्वारा सिखाये गये ऊंचे आदर्शों से सराबोर थे। हमारा मानसिक क्षितिज पहली बार विस्तृत हुआ था, जिसके अन्दर समग्र भारत एवं उसकी मानवता का समावेश हो चुका था। कांग्रेस समितियों का देहातों में सर्वत्र जाल फैलाया गया और राष्ट्रीयता के संदेश को देश के सुदूर कोनों तक पहुंचाया गया। शताब्दियों बाद भारत पहली बार एक बंधन में बंधा–कांग्रेस संगठन ने इसे एक ही धागे से एक सूत्र में बांधा। 'भारत माता की जय', 'महात्मा गांधी की जय,' एवं 'इन्कलाब जिंदाबाद' जैसे पवित्र नारों की गूंज से सात लाख गांव प्रतिनिनादित हो उठे। भारत की लोक प्रचलित निष्क्रिय आज्ञाकारिता की प्रवृत्ति का लोप हो चुका था। १९४२ में यह शीर्ष पर पहुंच गया, जब 'भारत छोड़ो' जैसा एक दूसरा नारा उसमें जुड़ा। वे शरारती लड़के, जिन्होंने कांग्रेस के ग्रामीण जुलूसों में भाग लिया था या पिछले बीस वर्षों के दौरान आयोजित कांग्रेस की सभाओं में राष्ट्रीय गान को स्वर दिया था, वे विदेशी युद्ध मशीनरी को तोड़–फोड़ करने वालों में बदल चुके थे या नेताजी सुभाष चन्द्र बोस की इंडियन नेशनल आर्मी में भर्ती हो गये थे। जो उस समय तक अंग्रेज अधिकारियों के सीधे कमान में थे, वे भी अपनी बारी के इंतजार में थे।

विदेशियों ने देखा कि भारत न सिर्फ जाग चुका है, बल्कि एक समग्र राष्ट्र के रूप में सांस भी ले रहा है, और यह भी कि अब वे उन भारतीय सैनिकों पर भरोसा नहीं कर सकते, जो देखते ही देखते अपने देशवासियों को अपना भाई समझने लगे हैं और अंग्रेजों को विदेशी, जो सिर्फ उन्हें हुक्म देता है भारत पर कब्जा बनाये रखना उनके लिए स्पष्ट तौर पर

असम्भव हो गया और बिना युद्ध किये भारत को जल्दी से छोड़ना उन्होंने तय कर लिया। हमारे नेताओं का सपना सच हो चुका था।

लेकिन इस उपलब्धि में असफलता भी शामिल थी। हम लोग अपने बहुसंख्यक मुस्लिम देशवासियों को यह यकीन दिलाने में असफल रहे कि वे अपनी पहचान को समग्र भारत में जोड़कर देखने की आवश्यकता को समझें। इस हद तक कि देश अपने चिह्न–तिरंगा से बाहर हो गया। ऐसा क्यों हुआ, इसके विस्तार में मैं नहीं जाना चाहता लेकिन इस पर आंसू बहाकर आगे बढ़ूंगा।

मिथ्या प्रचार

आज पूरे भारतीय संघ पर कांग्रेस का वजूद मौजूद है। सभी राज्यों एवं केन्द्र में कांग्रेस सत्ता में है। इन सरकारों के खिलाफ जो भी आलोचना होती है, चाहे वह न्याय–संगत हो या नहीं, उसके बारे में मुझे यहां कुछ नहीं कहना है। मैं कांग्रेस संगठन की बात करूंगा। एक सघन प्रचार यह हो रहा है कि साधारणतया सभी कांग्रेसी स्वार्थी हैं, इनसे जो अपेक्षाएं थीं, उस हिसाब से ये लोग घटिया साबित हुए हैं और वस्तुतः ये लोग भ्रष्टाचारी हैं और अपने स्वार्थ को देश के ऊपर रखते हैं। कुछ स्वार्थी तत्त्वों ने विशेषकर इस प्रचार को बढ़ावा दिया है, जो गलतफहमी या सही जानकारी के उपलब्ध न होने पर आधारित है। जहां तक मेरी जानकारी है, इस प्रचार का एक भाग सही भी हो सकता है और उसके लिए मैं तर्क दूंगा कि हमारे कुल राष्ट्रीय चरित्र में गिरावट आई है। जो गड़बड़ियां हुई हैं, उन्हें उचित ठहराने या घटाकर बताने का मेरा कोई इरादा नहीं है। हम लोगों को अपना नैतिक स्तर उठाना है लेकिन इसमें निश्चय ही कुछ समय लगेगा। हमें सिर्फ यह याद रखना है कि कांग्रेसियों ने देश की पुकार पर उस समय ध्यान दिया और कूद पड़े, जब भारत का राजनीतिक आकाश अनिष्ट सूचक बादलों से आच्छादित था, जबकि ये आलोचक विदेशियों की उपस्थिति से बिना विचलित हुए अपार सम्पत्ति संचित करने में लगे थे।

गौरवशाली कीर्तिमान

जो बात मैं घर–घर तक पहुंचाना चाहता हूं, वह यह है कि कांग्रेसियों के खिलाफ जो कुछ भी कहा जाता है, उस सबके बावजूद उनमें से अधिकांश अभी भी उन्हीं आदर्शों से प्रेरित हैं, जिनसे प्रेरणा पाकर वे

अंग्रेजों से जूझे थे। क्या हमारे देशवासी चीन, वर्मा एवं इन्डोनेशिया की स्थिति पर गौर करेंगे और भारत से उनकी तुलना करेंगे? मैं चाहता हूं कि वे यह समझें कि अगर कांग्रेस बहुत ज़्यादा बदनाम कांग्रेस होती, तो भारत में भी आज वही हो रहा होता जो इन देशों में घट रहा है। यह कांग्रेस ही है, जिसने देश को एक सूत्र में थाम रखा है– जो देश एवं दुर्व्यवस्था के बीच खड़ी है। उन्हें यह महसूस करना चाहिए कि हम लोगों को एक–दूसरे का गला पकड़ने से अगर कोई रोके हुए है, तो वे हैं गांवों में मौजूदा कांग्रेसी स्वयंसेवक, न कि सेना या प्रशासनिक तंत्र। ऊपर चर्चित एशियाई देशों में ऐसा कोई संगठन नहीं है, जो उतना ही विस्तृत, उतना ही शक्तिशाली और जो जनता की निष्ठा प्राप्त होने का दावा कर सके और जिसका उतना ही पुराना अतीत हो, जैसा कि भारत में कांग्रेस का है। हमारे नेताओं ने जीवन भर त्याग किया है और कठिन श्रम के पश्चात् वही हमारे बीच आये हैं, हमें उन पर गर्व है और हमें अपने को खुशनसीब समझना चाहिए कि ऐसे चरित्रवान मनुष्य हमारे पथ–प्रदर्शक हैं। इनमें से कोई भी अकेले यह आशा नहीं कर सकता कि वह कांग्रेस के खिलाफ सफल विद्रोह का नेतृत्व कर सकेगा या एकजुट होकर एक विरोधी पार्टी बनाये और सत्ता हड़पने की कोशिश कर सके। बर्मा या इन्डोनेशिया में ऐसा कोई भी संगठन नहीं है, जिसका इतना संयत प्रभाव हो।

चेतावनी के दो शब्द

हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि भारत एक ऐसा देश है, जो विखण्डनवादी प्रवृत्तियों से भरा हुआ है। यहां साम्यवादियों जैसी विध्वंसक शक्तियां भी हैं, जो अराजकता फैलाने के लिए निरंतर कार्यरत हैं। यदि कांग्रेस को भारत के राजनीतिक परिदृश्य से आज हटाया गया, तो राज्य रूपी भवन कल ही भहरा कर नीचे गिर पड़ेगा। आलोचक यह भी पायेंगे कि विघटनकारी तत्त्व देश के उस हिस्से या अर्थ–व्यवस्था के उस क्षेत्र में ज़्यादा सक्रिय हैं, जहां भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस कमजोर है। हमें बापू का आभार मानना चाहिए कि उन्होंने मुक्ति के इस यन्त्र को आग में तपाकर ऐसा बनाया कि आज वह हमारे राजनीति रूपी शरीर को, जो अभी पूरी तरह खत्म नहीं हुआ है, केन्द्र की ओर ढकेलने वाली शक्तियों के खिलाफ ढाल का काम कर रहा है। विदेशी विचारों से प्रेरित ये शक्तियां फिर अपना सिर उठा रही हैं।

ये घड़ियां संकटपूर्ण हैं। हमारी राष्ट्रीयता अभी सतह से ज़्यादा गहरी

नहीं है। इन खतरों को टल जाने दें, देश–भक्ति का पाठ लोग सही तौर पर ग्रहण कर लें, देश की अर्थ–व्यवस्था को मजबूत कर लें, ताकि निम्नतम आवश्यकताओं की पूर्ति हो सके। संक्षेप में हमारी स्वतंत्रता जड़े जमा ले, उसके बाद एक–दूसरे को नीचा दिखाने के लिए हमारे पास काफी समय होगा। वर्तमान स्थिति को दस साल से ज़्यादा नहीं झेलना है।

चौधरी चरण सिंह द्वारा रचित कृतियां

शिष्टाचार, १९४१. (२०१ पृष्ट)

हाउ टू एबोलिश जमींदारीः ह्विच एल्टरनेटिव सिस्टम टू एडाप्ट। (ज़मींदारी उन्मूलन कैसे करें: किस वैकल्पिक प्रणाली को अपनाएं) १९४७. इलाहाबादः सुपरिन्टेन्डेन्ट प्रिंटिंग एंड स्टेशनरी, संयुक्त प्रांत।

एबोलिशन ऑफ ज़मींदारीः टू अल्टरनेटिव्ज। (जमींदारी उन्मूलनः दो विकल्प) १९४७. किताबिस्तान, इलाहाबाद. (२६३ पृष्ट)

एबोलिशन ऑफ जमींदारी इन यू० पी०: क्रिटिक अंसरड। (उत्तर प्रदेश में जमींदारी उन्मूलनः आलोचकों को जवाब) १९४९. इलाहाबादः सुपरिन्टेन्डेन्ट प्रिंटिंग एंड स्टेशनरी, संयुक्त प्रांत।

व्हितहर कोआपरेटिव फार्मिंग? (सामूहिक खेती की दिशा?) १९५६. इलाहाबादः सुपरिन्टेन्डेन्ट प्रिंटिंग एंड स्टेशनरी, उत्तर प्रदेश।

एग्रेरियन रिवोल्यूशन इन उत्तर प्रदेश। (उत्तर प्रदेश में कृषि क्रांति) १९५७. प्रकाशन शाखा, सूचना विभाग, गवर्नमेंट ऑफ उत्तर प्रदेश १९५८ लखनऊ, सुपरिन्टेन्डेन्ट, प्रिंटिंग एंड स्टेशनरी, उत्तर प्रदेश। (६६ पृष्ट)

जॉइंट फार्मिंग एक्स–रैडः द प्रॉब्लम एंड इट्स सोल्यूशन। (संयुक्त खेतीः समस्या और समाधान) १९५९. किताबिस्तान, इलाहाबाद. (३२२ पृष्ट)

इण्डियाज पॉवर्टी एण्ड इट्स सोल्यूशन। (भारत की गरीबी और उसका समाधान) १९६४. एशिया पब्लिशिंग हाउस, बम्बई। (५२७ पृष्ट)

इण्डियन इकोनॉमिक पॉलिसीः दि गांधियन ब्लूप्रिंट। (भारत की अर्थनीतिः एक गांधीवादी रूपरेखा) १९७८. विकास पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली। (१२७ पृष्ट)

इकोनॉमिक नाइटमेयर ऑफ इण्डियाः इट्स कॉज़ एण्ड क्योर। (भारत की भयावह आर्थिक स्तिथिः कारन एवं निदान) १९८१. नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली। (५९८ पृष्ट)

लैण्ड रिफॉर्म्स इन यू० पी० एण्ड दि कुलक्स। (उत्तर प्रदेश में भूमि सुधार एवं कुलक वर्ग) १९८६. विकास पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली। (२२० पृष्ट)

'विशिष्ट रचनाएंः चौधरी चरण सिंह' भारत के भूतपूर्व प्रधानमंत्री श्री चरण सिंह द्वारा १९३३ और १९८५ के बीच लिखित २२ महत्वपूर्ण लेखों और भाषणों का संग्रह है। इस पुस्तक के अध्ययन से आज का पाठक वर्ग जान सकेगा कि मौजूदा समय की चुनौतियां न तो नई हैं और न ही समाधानहीन। इनसे निपटने के लिए एक मन–सोच अथवा जिगरा चाहिए, जो निश्चय ही धरा–पुत्र चरण सिंह में था। उनका लेखन उस प्रकाशस्तंभ की तरह है जो समुद्र में भटके हुए जहाजों को किनारे तक आने का रास्ता दिखाता है। उनके लेखन के आलोक में हम मौजूदा चुनौतियों को सही परिप्रेक्ष्य में न केवल समझ सकते हैं अपितु उनका समाधान भी पा सकते हैं। इन लेखों में उनकी राजनीतिक, सामाजिक और आर्थिक दृष्टि के दर्शन होते हैं। विषयवस्तु की दृष्टि से इन लेखों को सामाजिक लेखन, आर्थिक लेखन, राजनीतिक लेखन एवं उपसंहार – चार खण्डों में विभाजित किया गया है।

चौधरी चरण सिंह की अध्यात्मिक अंतश्चेतना और राजनीतिक मेधा महर्षि दयानन्द सरस्वती एवं महात्मा गांधी से अनुप्रेरित रही, तो सरदार पटेल उनके नायक रहे। इन विभूतियों पर चौधरी साहब ने अपने विचार लेखों में प्रस्तुत किये हैं। जाति–प्रथा, आरक्षण, जनसंख्या नियंत्रण, राष्ट्रभाषा जैसे सामाजिक मुद्दों के साथ ही शिष्टाचार जैसे विरल विषय पर भी दो लेख **खण्ड एकः सामाजिक लेखन** में दिये गये हैं।

चौधरी साहब भारत की उन्नति का मूल आधार कृषि, हथकरघा और ग्रामीण भारत को मानते थे। उनकी दृष्टि में ग्रामीण भारत ही वह नियामक तत्व रहा जिसे प्रमुखता देकर देश को आर्थिक रूप से सशक्त बनाया जा सकता है, साथ ही बेरोजगारी जैसी विकट समस्या को भी दूर किया जा सकता है। उत्तर प्रदेश में भूमि सम्बंधी सुधारों और जमींदारी समाप्त करने को लेकर चौधरी चरण सिंह पर धनी किसानों के पक्षधर होने के आरोप विरोधियों ने लगाये। उनका उन्होंने बेहद तार्किक ढंग से उत्तर दिया है। गांव–किसान और खेती के प्रति उपेक्षापूर्ण नीतियां एवं काले धन की समस्या जैसे तथा उपरोक्त विषयों पर केन्द्रित लेख **खण्ड दोः आर्थिक लेखन** के अन्तर्गत दिये गये हैं।

खण्ड तीनः राजनीतिक लेखन के अन्तर्गत भारत की लम्बी गुलामी के मूल कारणों का विश्लेषण, गांधी–चिंतन, देश में पहली गैर–कांग्रेसी जनता पार्टी की सरकार की आधारभूत नीतियां, देश विख्यात माया त्यागी कांड का समाजशास्त्रीय विश्लेषण, भाषा आधारित राज्यों के खतरे आदि मुद्दों के अलावा उनके नायक सरदार पटेल की स्मृति पर आधारित लेख हैं। इसी खण्ड में चौधरी साहब के ऐतिहासिक महत्व के दो भाषण भी संकलित हैं, जो लोकशाही पर संकट और राष्ट्रीय विघटन के खतरों के प्रति सचेत करते हैं।

अंतिम **खण्ड चारः उपसंहार** है, जिसमें चौधरी साहब ने राजनीति, समाज नीति और देश से सम्बंधित अधिकतर मुद्दों पर संक्षेप में अपने विचार प्रस्तुत किये हैं।

Charan Singh Archives
www.charansingh.org

मूल्य ₹६६